rekhta

ये जब्र भी देखा है तारीख़ की नज़रों ने
लम्हों ने ख़ता की थी सदियों ने सज़ा पाई

मुज़फ़्फ़र रज़्मी

'मुसहफ़ी' हम तो ये समझे थे कि होगा कोई ज़ख़्म
तेरे दिल में तो बहुत काम रफ़ू का निकला

मुसहफ़ी ग़ुलाम हमदानी

कह रहा है शोर-ए-दरिया[1] से समुंदर का सुकूत
जिस का जितना ज़र्फ़ है उतना ही वो ख़ामोश है

नातिक़ लखनवी

उन का जो फ़र्ज़ है वो अहल-ए-सियासत[2] जाने
मेरा पैग़ाम मोहब्बत है जहाँ तक पहुँचे

जिगर मुरादाबादी

एक मुद्दत से तिरी याद भी आई न हमें
और हम भूल गए हों तुझे ऐसा भी नहीं

फ़िराक़ गोरखपुरी

1. दरिया का शोर 2. सियासत के लोग / राजनीतिज्ञ

सुब्ह होती है शाम होती है
उम्र यूँही तमाम होती है

अमीरुल्लाह तस्लीम

ख़ुद अपनी मस्ती है जिस ने मचाई है हलचल
नशा शराब में होता तो नाचती बोतल

आरिफ़ जलाली

तर-दामनी[1] पे शैख़ हमारी न जाइयो
दामन निचोड़ दें तो फ़रिश्ते वज़ू[2] करें

ख़्वाजा मीर 'दर्द'

तुम मुख़ातिब भी हो क़रीब भी हो
तुम को देखें कि तुम से बात करें

फ़िराक़ गोरखपुरी

तुम्हें ग़ैरों से कब फ़ुर्सत हम अपने ग़म से कम ख़ाली
चलो बस हो चुका मलिना न तुम ख़ाली न हम ख़ाली

जाफ़र अली हसरत

1. भीगे हुए दामन 2. नमाज़ पढ़ने के लिए हाथ मुँह धोना

दिल के फफूले जल उठे सीने के दाग़ से
इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से

महताब राय ताबां

दिया ख़ामोश है लेकिन किसी का दिल तो जलता है
चले आओ जहाँ तक रौशनी मा'लूम होती है

नुशूर वाहिदी

न मैं समझा न आप आए कहीं से
पसीना पोंछिए अपनी जबीं[1] से

अनवर देहलवी

बड़ा शोर सुनते थे पहलू में दिल का
जो चीरा तो इक क़तरा-ए-ख़ूँ न निकला

हैदर अली आतिश

बड़े लोगों से मिलने में हमेशा फ़ासला रखना
जहाँ दरिया समुंदर से मिला दरिया नहीं रहता

बशीर बद्र

1. माथा

निकलना ख़ुल्द[1] से आदम का सुनते आए हैं लेकिन
बहुत बे-आबरू हो कर तिरे कूचे से हम निकले

मिर्ज़ा ग़ालिब

भाँप ही लेंगे इशारा सर-ए-महफ़िल जो किया
ताड़ने वाले क़यामत की नज़र रखते हैं

माधव राम जौहर

मिलाते हो उसी को ख़ाक में जो दिल से मिलता है
मिरी जाँ चाहने वाला बड़ी मुश्किल से मिलता है

दाग़ देहलवी

मिरे ख़ुदा मुझे इतना तो मो'तबर[2] कर दे
मैं जिस मकान में रहता हूँ उस को घर कर दे

इफ़्तिख़ार आरिफ़

आगाह[3] अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सौ बरस का है पल की ख़बर नहीं

हैरत इलाहाबादी

1. जन्नत, स्वर्ग 2. विश्वस्त ,ऐतबार के लायेक़ 3. परिचित

मुफ़लिसी[1] सब बहार खोती है

मर्द का ए'तिबार खोती है

वली मोहम्मद वली

तुम को आता है प्यार पर ग़ुस्सा

मुझ को ग़ुस्से पे प्यार आता है

अमीर मीनाई

राह-ए-दूर-ए-इश्क़ में रोता है क्या

आगे आगे देखिए होता है क्या

मीर तक़ी मीर

हम को मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन

दिल के ख़ुश रखने को 'ग़ालिब' ये ख़याल अच्छा है

मिर्ज़ा ग़ालिब

हम हुए तुम हुए कि 'मीर' हुए

उस की ज़ुल्फ़ों के सब असीर[2] हुए

मीर तक़ी मीर

1. ग़रीबी 2. बंदी ,कैदी

उम्र तो सारी कटी इश्क़-ए-बुताँ[1] में 'मोमिन'
आख़िरी वक़्त में क्या ख़ाक मुसलमाँ होंगे

मोमिन ख़ाँ मोमिन

शह-ज़ोर[2] अपने ज़ोर में गिरता है मिस्ल-ए-बर्क़[3]
वो तिफ़्ल[4] क्या गिरेगा जो घुटनों के बल चले

मिर्ज़ा अज़ीम बेग 'अज़ीम'

अंदाज़ अपना देखते हैं आईने में वो
और ये भी देखते हैं कोई देखता न हो

निज़ाम रामपुरी

और भी दुख हैं ज़माने में मोहब्बत के सिवा
राहतें[5] और भी हैं वस्ल[6] की राहत के सिवा

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

और होंगे तिरी महफ़िल से उभरने वाले
हज़रत-ए-'दाग़' जहाँ बैठ गए बैठ गए

दाग़ देहलवी

1. बुतों से इश्क़, मूर्तिपूजा 2. बलवान, शक्तिशाली 3. बिजली की तरह
4. बच्चा 5. राहत का बहू.,सुख 6. मिलन

कुछ तो मजबूरियाँ रही होंगी
यूँ कोई बेवफ़ा नहीं होता

बशीर बद्र

कुछ तुम्हारी निगाह काफ़िर थी
कुछ मुझे भी ख़राब होना था

असरार-उल-हक़ मजाज़

घर से मस्जिद है बहुत दूर चलो यूँ कर लें
किसी रोते हुए बच्चे को हँसाया जाए

निदा फ़ाज़ली

ख़ुदा के वास्ते इस को न टोको
यही इक शहर में क़ातिल रहा है

मज़हर मिर्ज़ा जान-ए-जानाँ

चलो अच्छा हुआ काम आ गई दीवानगी अपनी
वगरना हम ज़माने भर को समझाने कहाँ जाते

क़तील शिफ़ाई

जज़्बा-ए-इश्क़ सलामत है तो इंशा-अल्लाह
कच्चे धागे से चले आएँगे सरकार बंधे

इंशा अल्लाह ख़ान

ज़िक्र जब छिड़ गया क़यामत का
बात पहुँची तिरी जवानी तक

फ़ानी बदायुनी

ज़रा विसाल के बाद आइना तो देख ऐ दोस्त
तिरे जमाल[1] की दोशीज़गी[2] निखर आई

फ़िराक़ गोरखपुरी

दिल अभी पूरी तरह टूटा नहीं
दोस्तों की मेहरबानी चाहिए

अब्दुल हमीद अदम

पूछा जो उन से चाँद निकलता है किस तरह
ज़ुल्फ़ों को रुख़ पे डाल के झटका दिया कि यूँ

आरज़ू लखनवी

1. सौन्दर्य 2. अल्हड़पन

हर आदमी में होते हैं दस बीस आदमी
जिस को भी देखना हो कई बार देखना

निदा फ़ाज़ली

हम ने माना कि तग़ाफ़ुल[1] न करोगे लेकिन
ख़ाक हो जाएँगे हम तुम को ख़बर होते तक

मिर्ज़ा ग़ालिब

हज़ारों साल नर्गिस[2] अपनी बे-नूरी[3] पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदा-वर पैदा[4]

अल्लामा इक़बाल

ईद का दिन है गले आज तो मिल ले ज़ालिम
रस्म-ए-दुनिया भी है मौक़ा भी है दस्तूर भी है

क़मर बदायुनी

तुम तकल्लुफ़[5] को भी इख़्लास[6] समझते हो 'फ़राज़'
दोस्त होता नहीं हर हाथ मिलाने वाला

अहमद फ़राज़

1. उपेक्षा 2. फूल,आँख 3. रौशनी का न होना 4. जौहरी,पारखी
5. दिखावा 6. निश्छलता

हमें भी आ पड़ा है दोस्तों से काम कुछ यानी
हमारे दोस्तों के बे-वफ़ा होने का वक़्त आया

हरी चंद अख़्तर

जो कोई आवे है नज़दीक ही बैठे है तिरे
हम कहाँ तक तिरे पहलू से सरकते जावें

मीर हसन

किस ने भीगे हुए बालों से ये झटका पानी
झूम कर आई घटा टूट के बरसा पानी

आरज़ू लखनवी

बहुत पहले से उन क़दमों की आहट जान लेते हैं
तुझे ऐ ज़िंदगी हम दूर से पहचान लेते हैं

फ़िराक़ गोरखपुरी

मैं सच कहूँगी मगर फिर भी हार जाऊँगी
वो झूट बोलेगा और ला-जवाब कर देगा

परवीन शाकिर

जाती हुई मय्यत देख के भी वल्लाह तुम उठ के आ न सके
दो चार क़दम तो दुश्मन भी तकलीफ़ गवारा करते हैं

क़मर जलालवी

अपनी मिट्टी ही पे चलने का सलीक़ा सीखो
संग-ए-मरमर पे चलोगे तो फिसल जाओगे

इक़बाल अज़ीम

बर्बाद गुलिस्ताँ करने को बस एक ही उल्लू काफ़ी था
हर शाख़ पे उल्लू बैठा है अंजाम-ए-गुलिस्ताँ क्या होगा

शौक़ बहराइची

शायद मुझे निकाल के पछता रहे हों आप
महफ़िल में इस ख़याल से फिर आ गया हूँ मैं

अब्दुल हमीद अदम

लिपट जाते हैं वो बिजली के डर से
इलाही ये घटा दो दिन तो बरसे

दाग़ देहलवी

ख़ूब पर्दा है कि चिलमन से लगे बैठे हैं
साफ़ छुपते भी नहीं सामने आते भी नहीं

दाग़ देहलवी

उन के देखे से जो आ जाती है मुँह पर रौनक़
वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है

मिर्ज़ा ग़ालिब

शब को मय ख़ूब सी पी सुब्ह को तौबा कर ली
रिंद[1] के रिंद रहे हाथ से जन्नत न गई

जलील मानिकपूरी

दूर से आए थे साक़ी सुन के मय-ख़ाने को हम
बस तरसते ही चले अफ़्सोस पैमाने को हम

नज़ीर अकबराबादी

वो कौन हैं जिन्हें तौबा की मिल गई फ़ुर्सत
हमें गुनाह भी करने को ज़िंदगी कम है

आनंद नारायण मुल्ला

1. शराबी,धार्मिक बन्धनों से मुक्त

आँख पड़ती है कहीं पाँव कहीं पड़ता है
सब की है तुम को ख़बर अपनी ख़बर कुछ भी नहीं

मोहम्मद अली तिशना

है जवानी ख़ुद जवानी का सिंगार
सादगी गहना है इस सिन[1] के लिए

अमीर मीनाई

शब-ए-विसाल[2] है गुल कर दो इन चराग़ों को
ख़ुशी की बज़्म में क्या काम जलने वालों का

दाग़ देहलवी

यही जाना कि कुछ न जाना हाए
सो भी इक उम्र में हुआ मालूम

मीर तक़ी मीर

शिकस्त ओ फ़त्ह[3] मियाँ इत्तिफ़ाक़ है लेकिन
मुक़ाबला तो दिल-ए-ना-तवाँ[4] ने ख़ूब किया

नवाब मोहम्मद यार ख़ाँ अमीर

1. उम्र 2. मिलन की रात 3. हार व जीत 4. कमज़ोर दिल

अच्छा है दिल के साथ रहे पासबान-ए-अक़्ल[1]

लेकिन कभी कभी इसे तन्हा भी छोड़ दे

अल्लामा इक़बाल

दिल वो नगर नहीं कि फिर आबाद हो सके

पछताओगे सुनो हो ये बस्ती उजाड़ के

मीर तक़ी मीर

अब उदास फिरते हो सर्दियों की शामों में

इस तरह तो होता है इस तरह के कामों में

शोएब बिन अज़ीज़

किसी रईस की महफ़िल का ज़िक्र ही क्या है

ख़ुदा के घर भी न जाएँगे बिन बुलाए हुए

अमीर मीनाई

ऐ 'मुसहफ़ी' तू इन से मोहब्बत न कीजियो

ज़ालिम ग़ज़ब ही होती हैं ये दिल्ली वालियाँ

मुसहफ़ी ग़ुलाम हमदानी

1. अक़्ल की निगरानी

तिरछी नज़रों से न देखो आशिक़-ए-दिल-गीर[1] को
कैसे तीर-अंदाज़ हो सीधा तो कर लो तीर को

ख़्वाज़ा मोहम्मद वज़ीर लखनवी

'ग़ालिब'-ए-ख़स्ता के बग़ैर कौन से काम बंद हैं
रोइए ज़ार ज़ार क्या कीजिए हाए हाए क्यूँ

मिर्ज़ा ग़ालिब

नशेमन पर नशेमन इस क़दर तामीर करता जा
कि बिजली गिरते गिरते आप ख़ुद बे-ज़ार हो जाए

अज्ञात

कैसे आकाश में सूराख़ नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबीअ'त से उछालो यारो

दुष्यंत कुमार

सब का तो मुदावा[2] कर डाला अपना ही मुदावा कर न सके
सब के तो गरेबाँ सी डाले अपना ही गरेबाँ भूल गए

असरार-उल-हक़ मजाज़

1. दुखी आशिक़ 2. उपचार ,इलाज

ऐ 'ज़ौक़' तकल्लुफ़ में है तकलीफ़ सरासर
आराम में है वो जो तकल्लुफ़ नहीं करता

शेख़ इब्राहीम ज़ौक़

मैं जो सर-ब-सज्दा हुआ कभी तो ज़मीं से आने लगी सदा
तिरा दिल तो है सनम-आश्ना[1] तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में

अल्लामा इक़बाल

ये आरज़ू थी तुझे गुल के रू-ब-रू करते
हम और बुलबुल-ए-बेताब गुफ़्तुगू करते

हैदर अली आतिश

अब तो उतनी भी मयस्सर नहीं मय-ख़ाने में
जितनी हम छोड़ दिया करते थे पैमाने में

दिवाकर राही

ज़ाहिद[2] शराब पीने से काफ़िर[3] हुआ मैं क्यूँ
क्या डेढ़ चुल्लू पानी में ईमान बह गया

शेख़ इब्राहीम ज़ौक़

1. मूर्तिपूजक 2. परहेज़गार 3. नास्तिक

राह पर उन को लगा लाए तो हैं बातों में
और खुल जाएँगे दो चार मुलाक़ातों में

अज्ञात

हम वहाँ हैं जहाँ से हम को भी
कुछ हमारी ख़बर नहीं आती

मिर्ज़ा ग़ालिब

देख ज़िंदाँ[1] से परे रंग-ए-चमन जोश-ए-बहार
रक़्स[2] करना है तो फिर पाँव की ज़ंजीर न देख

मजरूह सुल्तानपुरी

रुख़-ए-रौशन के आगे शम्अ रख कर वो ये कहते हैं
उधर जाता है देखें या इधर परवाना आता है

दाग़ देहलवी

इश्क़ जब तक न कर चुके रुस्वा
आदमी काम का नहीं होता

जिगर मुरादाबादी

1. क़ैदख़ाना 2. नृत्य

हज़ारों काम मोहब्बत में हैं मज़े के 'दाग़'
जो लोग कुछ नहीं करते कमाल करते हैं

दाग़ देहलवी

रगों में दौड़ते फिरने के हम नहीं क़ाइल
जब आँख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है

मिर्ज़ा ग़ालिब

दर-ओ-दीवार पे हसरत से नज़र करते हैं
ख़ुश रहो अहल-ए-वतन हम तो सफ़र करते हैं

वाजिद अली शाह अख़्तर

वक़्त दो मुझ पर कठिन गुज़रे हैं सारी उम्र में
इक तिरे आने से पहले इक तिरे जाने के बाद

मुज़्तर ख़ैराबादी

अब के हम बिछड़े तो शायद कभी ख़्वाबों में मिलें
जिस तरह सूखे हुए फूल किताबों में मिलें

अहमद फ़राज़

अच्छा ख़ासा बैठे बैठे गुम हो जाता हूँ
अब मैं अक्सर मैं नहीं रहता तुम हो जाता हूँ

अनवर शऊर

मत सहल हमें जानो फिरता है फ़लक बरसों
तब ख़ाक के पर्दे से इंसान निकलते हैं

मीर तक़ी मीर

नहीं आती तो याद उन की महीनों तक नहीं आती
मगर जब याद आते हैं तो अक्सर याद आते हैं

हसरत मोहानी

ऐ सनम वस्ल की तदबीरों[1] से क्या होता है
वही होता है जो मंज़ूर-ए-ख़ुदा होता है

मिर्ज़ा रज़ा बर्क़

दिल के फफूले जल उठे सीने के दाग़ से
इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से

महताब राय ताबां

1. उपायों

दिया ख़ामोश है लेकिन किसी का दिल तो जलता है
चले आओ जहाँ तक रौशनी मालूम होती है

बुशूर वाहिदी

घर से मस्जिद है बहुत दूर चलो यूँ कर लें
किसी रोते हुए बच्चे को हँसाया जाए

निदा फ़ाज़ली

हज़ारों काम मोहब्बत में हैं मज़े के 'दाग़'
जो लोग कुछ नहीं करते कमाल करते हैं

दाग़ देहलवी

इक और दरिया का सामना था 'मुनीर' मुझ को
मैं एक दरिया के पार उतरा तो मैं ने देखा

मुनीर नियाज़ी

तू अगर पास नहीं है कहीं मौजूद तो है
तेरे होने से बड़े काम हमारे निकले

अहमद मुश्ताक़

RekhtaOfficial

Rekhta_Foundation

@Rekhta

JashneRekhtaOfficial

CONTACT@REKHTA.ORG